

हफ्तावार रिसाला : 386  
Weekly Booklet : 386

Buzurgane Deen Ke 40 Aqwal (Hindi)

# बुजूगनि दीन के 40 अक्वाल

सफ़्ताहत 40

अमीरे अहले सुनत بُشْرَى مُبَارَكَة के मुवारक  
कलम से तहरीर किये गए



पेशकश :

मजलिस आल मदीनतुल इलिया  
(दावत इस्लामी)

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّنَ  
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

## बुजुर्गने दीन के 40 अक्वाल

**दुआए अमीरे अहले सुन्नत :** या अल्लाह पाक! जो कोई 40 सफ़हात का रिसाला : “बुजुर्गने दीन के 40 अक्वाल” पढ़ या सुन ले उसे औलियाए किराम की सच्ची महब्बत दे और उस को मां बाप समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाखिला नसीब फ़रमा। امِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### पहले इसे पढ़िये

औलियाए किराम और सूफ़ियाए किराम (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم) अल्लाह पाक के बड़े ही मक्बूल बन्दे हैं। अल्लाह पाक इन को इल्मे लदुन्नी (या'नी अपनी त्रफ़ से, बिगैर किताबें पढ़े इल्म) इनायत फ़रमाता है। अ़कीदत और अदब से इन की सोहबत में बैठने वाला बद बख़्त नहीं रहता बल्कि इन हस्तियों की नज़रे करम पल भर में “गुनहगार” को राहे सुन्नत पर चला देती है। औलियाए किराम (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم) अपनी सबक आमोज़ नसीहतों और सुन्नतों भरे किरदार से नेकी की दा'वत देते और लोगों को मुकर्बीने बारगाहे इलाही (या'नी अल्लाह पाक के क़रीब) करते हैं। इस मुख्तसर किताब में अल्लाह वालों के मुख्तलिफ़ 40 अक्वाल जम्म किये गए हैं और येह 40 अक्वाल एक “अल्लाह वाले” अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी ने तहरीर फ़रमाए हैं। अल मदीनतुल इल्मय्या का शो'बा “हफ्तावार रिसाला मुतालआ” मुख्तलिफ़ मवाकेअ पर अमीरे अहले सुन्नत के क़लम से लिखे हुए इन अक्वाले बुजुर्गने दीन को तरतीब दे कर एक किताब की सूरत में पेश कर रहा है। अक्सर मकामात पर क़ौल की मुनासबत से उन बुजुर्ग की मुख्तसर सीरत भी बयान की गई है ताकि पढ़ने वाले को उन बुजुर्ग का तआरुफ़ हो। अल्लाह पाक इस किताब पर काम करने वालों की कोशिशों को क़बूल फ़रमाए और इसे उन के लिये बे हिसाब बख़िशश का ज़रीआ बनाए।

अल्लाह पाक अमीरे अहले सुन्नत को दराजिये उम्र बिलखैर अ़ता फ़रमाए और इन का साया खैरो आफ़ियत के साथ हम पर दराज़ फ़रमाए। امِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ व बे हिसाब मणिफ़रत  
अबू मुहम्मद ताहिर अ़त्तारी मदनी عَفِيْ عَنْهُ



## जिल्लतो ग्रम



**فرمانِ لُقَهَاتٍ :** "اے میرے بیٹے! قرآن سے بچنا کیوں کے  
یہ دن کی خلّت اور رات کا غم میں۔"

फरमाने लुक्मान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ : "ऐ मेरे बेटे ! कर्ज़ से बचना क्यूं कि ये ही दिन की जिल्लत  
और रात का ग्रम है।"

(تفسیر در منثور، 6/520)



हज़रते लुक्मान हकीम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ अल्लाह पाक के वली हैं, आप ने एक हजार साल उम्र पाई। हज़रते दावूद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से पहले आप "बनी इसराईल" के मुफ्ती थे। जब हज़रते दावूद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ मन्सबे नुबुव्वत पर फ़ाइज़ हो गए तो आप ने फ़तवा देना छोड़ दिया। आप ने चार हजार अम्बियाएँ किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की खिदमत में हाजिरी दी है। (अजाइबुल कुरआन, स. 358)  
अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मगिफ़रत हो। أَمْبِينِ بِحَاجَةٍ كَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

[الله]

## خَامُوسِيْهِ تُمْدَادَهُ اَهَادَهُ

كَعْبُ الْأَحْبَار رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرَطَتْ هِيَنْ - "كِمْ بُولَنْ بُرْهِيْ حَكْمَتْ هِيَه  
لَهُذَا خَا صُوشِيْ اختِيَارَ كِرْوَهِ بِهِ عَمَدَهُ عَادَتْ هِيَه ،  
إِسْ سَهْ بُوجَهْ بِلَهَا اُورْگَنَاهُوْ مِيْ كِهِيْ آتَيْ هِيَه -"



کا'بُول اَهَبَار رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرَمَاتَهُ هِيَه :

"کم بولنا بڈی هیکمات है لیہا جا خَامُوسِيْهِ دِیکھِیا ر کرو کی یہ تُمْدَادَهُ اَهَادَهُ है، इस से बोझ हलका और गुनाहों में कमी आती है।"

(موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 5/223، رقم: 107)



ہَجَرَتْ کا'بُول اَهَبَار دِیکھِیا ر کے سپولے یَهُدِیَوْنَ کے بहُوت بَडِیْ اَلِیمَ یَهِ، آپ نے هُبُورَ کا جَمَانَا کَلِيلَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَبِهِ وَسَلَّمَ دِیکھِیا ر مَنَانَا پَايَا مَغَرَ اَهَدَهِ فَارُوكِیْ مِنْ اَیْمَانَ لَا اَهِ اَهِ مُسَلَّمَانَوْنَ کَتَیِسَرَهِ خَلِیفَهِ، هَجَرَتْ دِسَمَانَ گَنَانِیْ رَبِّيْهِ اَهَدَهِ کَدَّارِهِ خَلِیفَهِ 32 हिजरी में आप की वफ़ात हिम्स (शाम) में हुई और वहीं आप का मजार शरीफ है। (میرआतुल मनाजीह, 8/282) اَلْلَّا هُوَ اَكْبَرُ पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मगिफ़रत हो। اَوْبِينْ بِحَجَارِ كَعْبَتِ الْأَيَّمَيْنِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

الله

## दुन्या की मुसीबतें

باقی بزرگ حضرت سیدنا کعب الْأَحْبَار رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "جو شخص صوت کو بیجان لتا ہے اُسے پر دنیا کی مصیبیں اور غم بلکہ ہو جاتے ہیں۔"



صلوا علی الحبيب  
صلی اللہ علی محمد

ताबेर्ड बुजुर्ग हज़रते सच्चिदुना का'बुल अहबार फ़रमाते हैं: "जो शख़्स मौत को पहचान लेता है उस पर दुन्या की मुसीबतें और ग़म हलके हो जाते हैं।" (احیاء العلوم، 5/194)



दुन्या के ग़म

दुन्या की मुसीबतें

## ڈلما کی بادشاہوں پر ہوکومت

حضرت ابو اشوبؑ فرماتے ہیں: ”علم سے بڑھ کر عزت والی چیز کوئی نہیں، بادشاہوں پر حکومت کرتے ہیں جبکہ علماء بادشاہوں پر حکومت کرتے ہیں۔“

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْجَبِيبِ



ہجرتے ابू اس्वاد رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرِمَاتَ هُنَّ :

‘इल्म से बढ़ कर इज़ज़त वाली चीज़ कोई नहीं, बादशाह लोगों पर ہوکومت करते हैं जब कि डलما बादशाहों पर ہوکومت करते हैं।’

(احیاء العلوم، 1/22)

ہجرتے ابू اس्वاد دुऊलیٰ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ اَعْجَمِيْم ताबेई بुजुर्ग हैं। مुसल्मानों के चौथे ख़लीफा हज़रते मौला अली उली ने जब लोगों को अरबी बोलचाल में ग़लतियां करते पाया तो इस्लाह के लिये بुन्यादी कवाइद मुरतब किये और हज़रते अबू اس्वद दुऊली को कलिमे की तीनों क़िस्मों “इस्म، फे’ल، हफْ” की ता’रीफ़ लिख कर दीं और इस में इज़ाफ़ा करने का फरमाया।

(143) درِّ اَطْفَالَ، ۱۴

الْمُؤْمِنُونَ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّنَ صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَعْلَمُ

अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।





مَنْجَرَةِ إِمَامِ حَسَنِ بَصَرِي

## आजिजी करने वाले बुजुर्ग

حضرتِ حَسَنَ تَعْبُرِي رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ بَيْتَ عَاجِزِي كَرْنَے والے بِزَرْگَرِ ہے،  
ہر شخص کو اپنے سے بہتر نصیور کیا کرتے ایک پر فرمایا: اگر عذاب سے نجات  
پائیا تو میں بہتر ورنہ کتنے مجھ جیسے سینکڑوں گنگاروں سے بہتر ہے۔



ہज़رतے हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ بहت اجیجی کرنے वाले बुजुर्ग थे, हर शख्स को अपने से बेहतर तस्वुर किया करते, एक बार फ़रमाया : अगर अज़ाब से नजात पा गया तो मैं बेहतर वरना कुत्ता मुझ जैसे सेंकड़ों गुनहगारों से बेहतर है।

(متکرہ الاولیاء، ص 43، حصہ اول)

अजीम ताबेई बुजुर्ग हज़रते हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ بहت मदीनए पाक में अहदे फ़ारूकी में पैदा हुए, मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते उमर ने आप को तहनीक (यानी घुट्टी) दी, मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अली (رضي الله عنه) से आप की मुलाक़ात हुई, रजब शरीफ 110 हिजरी में आप की वफ़ात हुई।

(اجمال ترجمہ اکمال، ص 19)

امِّين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّنِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

[الله]

## شہزاد کا گولام

”جب سب سے پہلے درہم و دینار تیار ہوئے تو شیطان نے اُن کو افکار  
اپنی پیشانی پر رکھا پھر ان کو جرم اور بولا :  
جس نے تم سے محبت کی حقیقت میں وہ میرا غلام ہے۔“

هُوَ كُوْدُنْيَاكِ حَوْلَنَ نَهْ زَرْ جَاسِئْ صَلِّوا عَلَى الْكَبِيرِ  
پَارَهْ آقَاكِ مِيْهِنَظْرَ جَاسِئْ صَلِّي اللَّهُ عَلَى قَمْدَ



ہجرتے ساخی دُنیا ہے سان بس ری فرماتے ہیں : ”جب سب سے پہلے دیرہم دینار تیار ہوئے تو شہزاد نے ان کو افکار اپنی پیشانی پر رکھا پھر ان کو جرم اور بولا : جس نے تم سے محبت کی حقیقت میں وہ میرا غلام ہے۔“ (احیاء العلوم، 3/288)

ہم کو دُنْیَا کی دُولت ن جر چاہیے  
پ्यارے آکڑا کی میठی نجَر چاہیے





## एक दिलचस्प बात



فَرِحَانٌ (ام) "تُهَارِي بْهَائِي كِ دِلِ مِي تُهَارِي كِتْنِي  
بَا قِرَرَةَ اللَّهِ عَلَيْهِ صَحِبَتْ لَيْسَ كَا انْدَازِكَهِ اسْ بَاتِ سَعِيْلِي  
لَغَوْكَهِ اسْ بَنِي بْهَائِي كِ تُهَارِي دِلِ مِي كِتْنِي مَحِبَّتْ لَيْسَ" -

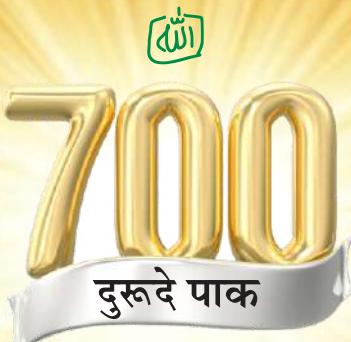
फ़रमाने इमाम बाक़िर के दिल में तुम्हारी  
कितनी महब्बत है इस का अन्दाज़ा तुम इस बात से लगाओ कि अपने भाई  
की तुम्हारे दिल में कितनी महब्बत है।"

(حلية الاولى، 3، رقم: 218)

क़ब्रِ مُبَارَكِ إِمَامِ الْبَاقِرِ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ



शहज़ादिये कौनैन हज़रते बीबी फ़ातिमा رضي الله عنها के दिल का चैन, हज़रते इमाम हुसैन رضي الله عنه के पोते और इमाम ज़ैनुल आबिदीन رضي الله عنه के शहज़ादे, सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के पांचवें शैखे शरीअतो शैखे तरीक़त हज़रते इमाम बाक़िर رضي الله عنه के مساکِ الْاسْكِينِ، 1/213 हैं। आप का मज़ार शरीफ जन्नतुल बक़ीअू में है। अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब माफ़रत हो। اَوْمَيْنِ بِسْجَدَةِ خَاتَمِ النَّبِيِّنَ مَلِيْلُ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْهُدُوْلُ وَسَلَّمَ



﴿جَوَّوْسِي عَلَيْهِ شَنِّاعُ الْمُعْظَمِ مِنْ رُوزَانَه ٧٥٥ بَار > دُرُودِ پاگ پُر ٹھنگ کا، اللہ ۱۷ کے فرشتے  
 فرمانِ امام ﴾ مُقْرَر فرمادے گا جو اس دُرُودِ پاگ کو حفظ نہ رکم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی  
**جعفر صادق** بار کا ۸ میں ۶ بخرا یعنی ۱۲ بار کا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی روحِ صبار رکھ  
 خوش ہوگی، پھر اللہ ۱۷ کا ان فرشتوں کو حکم دے گا کہ اس دُرُودِ پُر ٹھنگ والے کے لئے  
 قیامت تک دعاۓ مغفرت کرتے رہو،



صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ وَسَلَامٌ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَامٌ

फरमाने इमाम जा'फरे सादिक<sup>رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ</sup>: जो कोई शा'बानुल मुअज्ज़म में रोज़ाना 700 बार दुरूदे पाक पढ़ेगा, अल्लाह पाक कुछ फरिश्ते मुकर्रर फरमा देगा जो इस दुरूदे पाक को हुज़रे अकरम <sup>صَلَّى اللّٰهُ عَلٰيْهِ وَسَلَّمَ</sup> की बारगाह में पहुंचाएंगे, इस से रसूलुल्लाह<sup>صَلَّى اللّٰهُ عَلٰيْهِ وَسَلَّمَ</sup> की रुहे मुबारक खुश होगी, फिर अल्लाह पाक उन फरिश्तों को हुक्म देगा कि इस दुरूद पढ़ने वाले के लिये कियामत तक दुआए मगिफरत करते रहो। (القول البديع، ص 395)

(القول البدع، ص 395)

अजीम ताबेई बुजुर्ग हज़रते इमाम जा'फरे सादिक<sup>رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ</sup> की विलादत 17 रबीउल अव्वल 83 हिजरी पीर शरीफ के दिन मदीनए पाक में हुई। आप <sup>رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلٰيْهِ</sup> वालिद की तरफ से “सिद्दीकी” और वालिद की तरफ से “अल्लवी व फ़ातिमी” हैं। اُمِّين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰيْهِ وَسَلَّمَ

اللَّهُمَّ

दुन्या को क्या हुक्म है ?

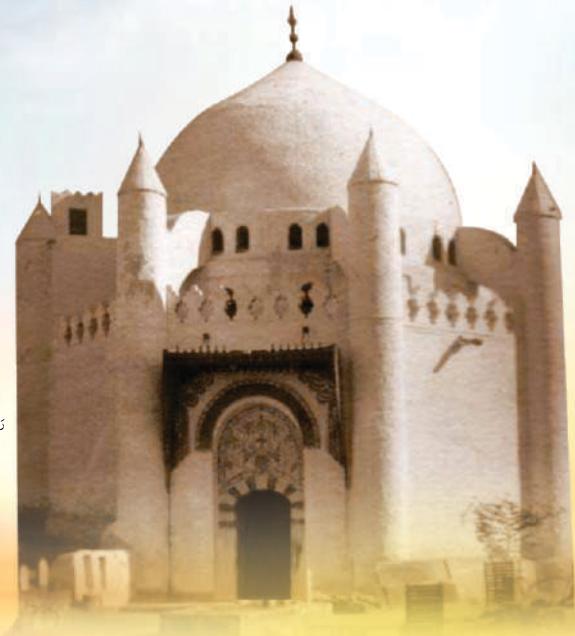
فِرْمانِ امْرٍ جَعْفَر صَادِقٌ "اللَّهُمَّ كَنْسِي دُنْيَا کو کم ارشاد فرمایا :  
ای دُنْيَا ! جو صیری عبادت کرے تو اُس کی خدمت کرو اور  
جو تیری خدمت کرے تو اُس سے تھکا <-> -"



फ़रमाने इमाम जा'फ़रे सादिक़ : "अल्लाह पाक ने दुन्या को हुक्म इशाद फ़रमाया : ऐ दुन्या ! जो मेरी इबादत करे तू उस की ख़िदमत कर और जो तेरी ख़िदमत करे तू उसे थका दे ।"

(फैज़ाने इमाम जा'फ़रे सादिक़, स. 19)

क़दीم मज़ारे मुबारक  
इमाम जा'फ़रे सादिक़



الله

## بُرے خَاتِمِ کا سَبَب

فَرْمَانِ إِمَامٍ أَعْظَمَ رَحْمَةً اللَّهِ عَلَيْهِ:



”بُرے خَاتِمِ کا سَب سے بُرَا سَبَب ظُلْمٌ ہے“

فَرْمَانِ إِمَامٍ أَعْظَمَ رَحْمَةً اللَّهِ عَلَيْهِ:

”بُرے خَاتِمِ کا سَب سے بُرَا سَبَب ظُلْمٌ ہے۔“

(الحاوى للفتاوى، 2/138)

مَجَارِيِّ إِمَامِ آ‘جَمِ الْأَبْوَابِ الْهَنَفِيِّ



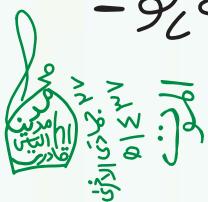
ابُو جَمِيلْ تَابَرِيْ بُوْزُورْغْ، كَرَوَدَنْ هَنَفِيَّوْنَ كَمِ إِمَامِ، إِمَامِ آ‘جَمِ الْأَبْوَابِ الْهَنَفِيِّ كَمِ نَوْمَانِ بِنِ سَبِيلِيْهِ 70 هـ. مِنْ إِرَاقَ كَمِ مَسْهُورِ شَاهَرَ “كُوفَّا” مِنْ پَيَادَهُ ہُوَ اُورَ 80 سَالَ كَمِ شَاهَنَشَهَ مُعَمَّدِ 150 هـ. مِنْ وَفَاتَهُ پَارِسِ । (نُوْجُهُتُولِ كَارِي، 1/169، 219) آجَ بَهِ بَغَدَادَ شَارِيْفَ مِنْ آپَ كَمِ مَجَارِيِّ شَارِيْفَ بَرَكَاتَ لُوتَهُ ہُوَ ।

أَمِينُ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّنِ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

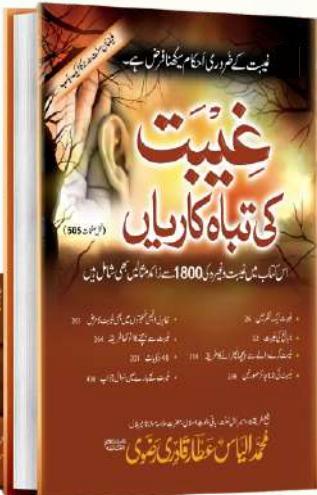
اللہ

## تذکرہ خیر سے کरئے

فرمان سفیان ثوری : ”اُنے بھائی کی غیر موجودگی میں اُس کا ذکر اُسی طرح کرو جس طرح اپنی غیر موجودگی میں ہم اپنا ذکر ہونا پسند کرتے ہو۔“



جیسا



فَرْمَانَ سُفْيَانَ سُؤْرَى : ”أَنْتَ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَإِنْ أَنْتَ نَبِيٌّ فَلَا يُحْكَمُ لِلْمُؤْمِنِينَ إِلَّا بِمِنْ حَدَّدَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْأَعْدَادَ“  
”آپنے بھائی کی غیر موجودگی میں اُس کا ذکر اُسی طرح کرو جس طرح اپنی غیر موجودگی میں ہم اپنا ذکر ہونا پسند کرتے ہو۔“

(شنبیۃ المؤمنین، ص 192)

ہज़ر تے ابू ابُدُلَلَاه سُفْیَانَ بْنَ سَرْدَدَ سُؤْرَى اُمَّيَّرُولَ مُعَامِنِيَنَ فِیْلَ هَدَیَسَ ثَوْرَیْ 97 هـ بِ مُتَّابِکِ 716ء کو کُوفَّہ میں پیدا ہوئے۔ اُنکے دینی اور تکوّنا و پرہنچ جگاری میں اپنے جُمَانَے کے ایمام تھے۔ 161 هـ بِ مُتَّابِکِ 778ء میں انیشکا لِ فَرْمَانَوا

امِنْ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ |

الله

## سے (100) حج سے اپنے

امام مالک رحمۃ اللہ علیہ بیان کرتے ہیں کہ  
 حضرت ربیعہ نے فرمایا : "صیرے نزدیک کسی شخص کو نازک  
 صائل بتانا روئے زمین کی تھی دولت صداقت کرنے سے بہتر ہے اور  
 کسی شخص کی دینی الجهن دور کر دینا ستون حج کرنے سے افضل ہے" ॥



امام مالک رحمۃ اللہ علیہ بیان کرتے ہیں کہ حضرت ربیعہ نے فرمایا : "میرے نجٹیک  
 کیسی شاخس کو نماج کے مساواں رکھنا جمیں کی تمام دللت سدکا کرنے سے  
 بہتر ہے اور کسی شاخس کی دینی علذیں دوڑ کر دینا سے (100) حج کرنے سے اپنے  
 ہے ।"

(بستان الحدیث، ص 38)



کروڑوں مالکیوں کے انجیم پے شوا حجرا نے امام مالک بیان ان سے ہے ۔ آپ چار مساجد میں سے اک  
 مسجد امام اور تابع تابع بزرگ ہیں ۔ آپ کی ولادت مسجد امام کوہل کے معتاب 93 ہیں میں مدنی شریف میں ہوئی اور  
 مدنی پاک میں ہی آپ کا انتقال شریف ہوا ۔ آپ کا مساجد شریف مدنی کے مسجد امام کوہل بکریہ میں  
 ہے ۔ اللہا ہے اک کوہل کے حماری بے ہساب مانی گئی ہے ۔

الله

## بَدْ نِيْغَاْهِيْ كَا نُوكْسَاَن

إِرْشَادِ عَلَّاَبِنْ زِيَادِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ

”عورت کی چادر پر بھی نظر نہ ڈالو۔

کیون کہ نظر دل میں شَیْخَوَت پیدا کرتے ہے۔“

صَلَّوَاتُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ



इशादे अला बिन ज़ियाद :

“औरत की चादर पर भी नज़र न डालो क्यूं कि नज़र दिल में शहवत पैदा करती है।”

(ابن حبان، ج 2، ص 265، حدیث: 1428)



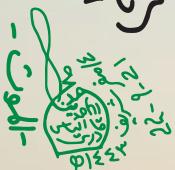
अजीम ताबेई बुजुर्ग हज़रते अला बिन ज़ियाद मदीनए मुनव्वरह से हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ इबादत के मुआमले में नमूदो नुमाइश से बचने वाले, दुन्या से कनारा कश, आखिरत के लिये हर वक्त तय्यार रहने वाले, नेक आ'माल का ज़खीरा करने वाले और तन्हाई पसन्द थे। आप की वफ़ात शरीफ 194 हिजरी में हुई। (अल्लाह वालों की बातें, 2/373)

أَمِينٌ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّنِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

الله

## رہمت پلٹ جاتی ہے

حضرت حاتم اَصْحَم رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: ”جب کسی مجلس (یعنی بیٹھک) میں یہ تین بے آئس ہوں تو ان سے رحمت پلٹ جاتی ہے: (۱) نیا کا خُگر (۲) زپا (۳) ہنسنا اور (۴) لوگوں کی غیبت کرنا۔“



ہجّرتو ہاتیمے اس سام فرماتا ہے: ”جب کسی مجلس (یا’ نی بیٹھک) میں یہ تین باتें ہوں تو ان سے رہمت پلٹ جاتی ہے: (۱) دنیا کا جیکر (۲) جیسا دنیا کا جیکر (۳) لोگوں کی غیبت کرنا۔“ (تنبیہ المغثیین، ص ۱۹۴)



ہجّرتو ہاتیمے اس سام مسحور ولی علماً رحمۃ اللہ علیہ شاکیک بلالی کے مورید اور ہجّرتو احمد بن حبیب کے مرشید تھے۔ ہجّرتو جو نے دباغ دادی رحمۃ اللہ علیہ آپ کا شومار سیہی کین میں کرتے ہیں۔ آپ دوسروں کو تو خوب نوازتے لیکن ڈمُمن کیسی سے کوچھ کبूل نہیں فرماتے تھے، آپ کی وفات 237ھ میں ہوئی۔ (تذکرہ الرحلہ، ص ۲۰۱)

اللّٰہُمَّ إِنِّي بِمَا أَنْعَمْتَ لِي مُشْكِنًا وَأَنْوَحْتَ لِي مُنْهَىً



## انجام کی خوشی

حضرت شیخ سقطی (رحمۃ اللہ علیہ) فرماتے ہیں :  
 "لوگ جتنا اپنی اولاد پر شفقت کرتے ہیں، اُتنی شفقت اپنی جانوں پر (کھلی)  
 کرتے (یعنی گناہوں سے بچتے، نیکیاں کرتے) تو انہیں اپنے انجام (یعنی خاتم) میں  
 خوشی ملتی۔"



ہजّرte شیخ ساری سکتی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں : "لोگ جیتنا اپنی اولاد پر شفقت کرتے ہیں اُتنی شفقت اپنی جانوں پر (کھلی)  
 ہیں تھیں اسے بچتے، نیکیاں کرتے) تو انہیں اپنے انجام (یعنی خاتم) میں  
 خوشی ملتی۔"

(حلیۃ الاولیاء، 10 / 122، رقم: 14707)



سیلسیلہ اہلیہ کا دیریخی رجیویت کے انجیم بوجوگ ہجّرte ابوبکر ہسن ساری بین مغلیلہ سکتی کی  
 پیدائش تکریبی 155ھ میں بگداد شریف میں ہوئی۔ آپ رحمۃ اللہ علیہ شوراع میں "سکتی (یا'نی ما'مولاً اور چوتی موتی چیز)"  
 بچتے ہے۔ اسی معاشرت سے آپ کو "سکتی" کہا جاتا ہے۔ آپ ہجّرte ما'مولاً کے مورید اور ہجّرte  
 چوند بگدادی کے ماموں اور عسٹاد ہیں۔ رمسانیل مبارک 253ھ کو انجانے فخر کے با'd وفاٹ پارہ اور مجاہرے  
 فایصلہ انوار شونیجیت کا ببرستاں میں ہے۔

(ذکرۃ الاولیاء، 1 / 246)

امین بجای خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم

الله

مजारे इमाम बुखारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ

## کوک्वتے ہٹاپیڈا

حضرت امام بخاری رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ فرماتے ہیں :

”میں نے انٹیہائی توجہ اور استقامت کے ساتھ مطالعہ

کرنے کو قوّت حافظہ کیلئے بڑا فائدہ مند ہیا گی۔“



ہजरتے इमाम बुखारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :

“मैं ने इन्तिहाई तवज्जोह और इस्तिक़ामत के साथ मुतालआ करने को कुक्वते ہٹاپیڈا के लिये बड़ा फ़ाएदे मन्द पाया है।” (फ़ैज़انे इमाम बुखारी, स. 9)

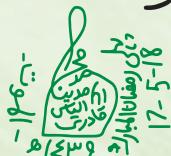
इमाम बुखारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ की विलादत 13 शब्वाल 194 हि. जुमुआ के रोज़ (उज्बेकिस्तान के एक शहर) “बुखारा” में हुई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ का नाम मुहम्मद और कुन्यत अबू अब्दुल्लाह है। आप के अल्काबात में से येह भी हैं : अमीरुल मुअमिनीन फ़िल हदीस, ہٹاپیڈا हदीस वगैरा। अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मणिफ़रत हो। امِين بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

اللہ

## تکلیفِ دُور کرو

ارشاد بشر حافی علیہ رحمۃ اللہ الکافی

”صلیٰن کے دل میں خوشی داخل کرنا، مظلوم کی خریداری کرنا،  
اُس کی تکلیف کو دور کرنا اور کمزور کی مدد کرنا،  
انفلی حج سے فضل ہے۔“



इशादि बिश्रे हाफी : ”مُسَلْمَان के दिल में खुशी दाखिल करना,  
मज़्लूम की फ़रियाद रसी करना, उस की تکلीف को दूर करना और कमज़ोर की  
मदद करना 100 नफ़्ली हज से अफ़ज़ल है।“ (قوت القلوب، 1/165)



हज़रते बिश्र बिन हारिस बग़दादी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की कुन्यत अबू نसر है। “हाफी” के लक़ब से मशहूर हैं। 152 हि. को पैदा हुए और 227 हि. को जुमुआ के दिन रबीउल अव्वल के महीने में बग़दाद में इन्तिकाल फ़रमाया। (152 रहमत भरी हिकायात, स. 175, 177) अल्लाह पाक ने इन के जनाजे के साथ चलने वालों की मगिफ़रत फ़रमादी।

امِنْ بِجَاهِ الْحَاتِمِ النَّبِيِّنَ ﷺ

کلید

### بُرَايِيَّوْنَ كِي چَابِي

عُصْنَه آئے تو اُس کو دُور کریں، غصہ کے مطابق کرنگز ریں۔

حضرت جعفر بن محمد رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَامٌ فَهَذِهِ هِيَ:

عُصْنَه بِرْ بُرَائِيَّ کی چَابِي (Key) ہے۔



گُوسما آए تو اس کو دُور کرئے، گُوسما کے مُتَابِق کر ن گُজَرَے ।

ہَجَرَتَهُ زَانِ فَرَبِّنَ مُحَمَّدَ فَرَمَأَتْهُ:

گُوسما ہر بُرَايِيَّ کی چَابِي (Key) ہے ।

(الزَّوْاجُ، 1/107)



इसमें वक्त हज़रते इमाम अबुल अब्बास जा'फ़र बिन मुहम्मद मुस्तग्फ़री हनफ़ी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَامٌ की विलादत 350 हि. को एक इलमी घराने में हुई और 29 या 30 जुमादल ऊला 432 हि. को नसफ़ में वफ़ात पाई, आप बहुत बड़े आलिम, मुहद्दिस, उस्ताजुल उलमा और साहिबे तसानीफ़ हैं। कई उलमा ने आप से इलमे दीन हासिल किया। (الغوانِي الحبيب، ص 74، رقم: 104)

اَمِينٌ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّنِ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَامٌ

اللّٰهُ

## बुरी सोहबत का नुकसान

ارشاد داتا حضور رحمۃ اللہ علیہ

"بُرے لوگوں کی صحبت میں رہنے والا شرارتِ نفس کا  
شکار بن جاتا ہے، اگر بندے میں نیکی اور بھلائی ہم تو  
نیکوں کی صحبت میں رہنا پسند کرے گا۔"



इशादे दाता हुज़ूर : رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ

"बुरे लोगों की सोहबत में रहने वाला शरारते नफ्स का शिकार  
बन जाता है, अगर बन्दे में नेकी और भलाई हो तो नेकों की  
सोहबत में रहना पसन्द करेगा।" (फैज़ाने दाता अली हिज्वेरी, स. 70)

رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ مजारे दाता अली हिज्वेरी

हज़रत दाता अली हिज्वेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ की विलादत कमो बेश 400 हि. में ग़ज़ी में हुई, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ की कुन्यत  
अबुल हसन, नाम अली और लक़ब दाता गन्ज बख्शा है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ का शजरए तरीक़त 9 वासियों से  
मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अलियुल मुर्तज़ा शेरे खुदा तक पहुंचता है। अल्लाह पाक की  
امين بجا وَخَاتَمُ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

## شَبَّـ بَرَاءَتْ شَبَّـ شَفَاعَـتْ

شبِ براءَتْ کو "شَبَّـ شَفَاعَـتْ" بھی کہتے ہیں،  
کیونکہ اسی رات میں آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے  
اپنی اُمَّت کی شفاقت کی درخواست کی تو  
اللہ پاک نے تھام اُمَّت کی شفاقت منظور فرمائی  
مگر وہ شخص جو رحمتِ الٰہ سے اونٹ کی  
طرح دُور بھاگ گیا اور گناہوں پر اصرار  
(یعنی بار بار) کر کر خود سے بہت زیادہ  
دُور ہوتا گیا۔



इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرِمाते हैं : शबे बराअत को “शबे शफ़ाअत” भी कहते हैं, क्यूं कि इस रात में आप ने अपनी उम्मत की शफ़ाअत की दरख़्वास्त की तो अल्लाह पाक ने तमाम उम्मत की शफ़ाअत मन्ज़ूर फ़रमाई मगर वोह शख़्स जो रहमते इलाही से ऊंट की तरह दूर भाग गया और गुनाहों पर इसरार (या'नी बार बार) कर के खुद ही बहुत ज़ियादा दूर होता गया । (ماشفة القلوب، ص 303 ملخص)

इमाम ग़ज़ाली का नाम “मुहम्मद” था । आप 450 हि. मुताबिक 1058 ई. में पैदा हुए । (تَعَالَى السَّادَةُ الْقَرِيبُونَ، 1/9) विसाल शरीफ के वक्त बुखारी शरीफ आप के सीने पर थी, आप ने बार बार येह मुख़्वासर और जामेअ़ तरीन नसीहत शागिर्दों को फ़रमाई : ”عَيْنَكِ بِالْخَلَاصِ“ : या'नी इख़्लास इख़्लायर कीजिये, येह फ़रमाते ही आप 14 जुमादल उख़ा 505 हिजरी में इन्तिकाल फ़रमा गए । (مراجِن، 3/141) अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो । امِينٌ بِجَلَالِ حَاتَمِ النَّبِيِّينَ عَلَى اللَّهِ عَزَّ ذَلِكَ الْهُوَ سَلَّمَ

الله

تمام نےکیوں کی اسل

۱۴۶۰ غزالی رحمۃ اللہ فرماتے ہیں :

"جیسے دنیا کی محبت ہے سنایوں کی جڑ ہے"

ایسے ہے دنیا سے نفرت ہے ان نیکیوں کی  
اصل (یعنی جڑ) ہے۔"



امام گزالتی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں : "जैसे दुन्या की महब्बत تمام गुनाहों की जड़ है ऐसे ही दुन्या से नफ़رत تمام नेकियों की اسल (जड़) है।" (لیسر بشرح جامع الصغیر، ۱/۴۹۲)



الله

## مُسیبَت مِنْ نَّفَرَةٍ

کہا گیا ہے : "زبان کو آزاد میں چھوڑو یہ تکہار کمزورت خراب کر دے گی۔"

اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ "زبان کی حفاظت کرو، نہ بولونہ صعیب میں ہو۔"



کیوں کے صعیبیتیں زبان کے سپرد کر دی گئی ہیں۔

इमाम ग़ज़ाली رحمतُ اللہ علیہ فرمाते हैं : कहा गया है : "ज़बान को आज़ाद मत छोड़ो वरना येह तुम्हारी इज़्ज़त ख़राब कर देगी ।" और येह भी कहा गया है कि "ज़बान की हिफाज़त करो, न बोलो न मुसीबत में पड़ो, क्यूं कि मुसीबतें ज़बान के सिपुर्द कर दी गई हैं ।"

(منہاج العابدین، ص 66)

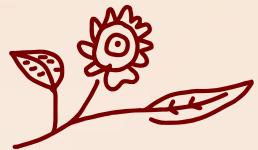


الله

## خوشی بھی مُسیبَت

فرمانِ سید احمد سعیر رفاقِ حب رحمۃ اللہ علیہ :

”کتنے ہی خوش ہونے والے ایسے ہیں کہ  
ان کی خوشی ان کے لئے مُصیبَت بن جاتی ہے۔“



फ़रमाने सच्चिद अहमद कबीर रिफ़ाईؒ : ”कितने ही खुश होने वाले ऐसे हैं कि उन की खुशी उन के लिये मुसीबَت बन जाती है।“

(फैजाने सच्चिद अहमद कबीर रिफ़ाई, स. 28)

مَسْجَدِ الرَّحْمَنِ الْمُبْرَكِ  
مَسْجَدِ الرَّحْمَنِ الْمُبْرَكِ

आप का नाम अहमद है। जद्दे अमजद “रिफ़ाआ” की मुनासबत से रिफ़ाई कहलाए। आप सच्चिदुश्शुहदा, नवासए मुस्तफ़ा इमामे हुसैनؑ की औलाद में से हैं, आप की कुन्यत अबुल अब्बास और लक्कब मुहयुद्दीन है। आप की विलादत 15 रजब शरीफ 512 हि. मुताबिक़ पहली नवम्बर 1118 ई. में हुई। वफ़त शरीफ़ के वक़्त ज़बान पर ये ह जारी था :

أَشْهَدُ أَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ

امِينٌ بِحَاجَةِ الْنَّبِيِّنَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ



## میلاد منانے کا شاندار فرماں

اما ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:  
 صلی اللہ علی من نے صیلہ شیطان کی خلت اور  
 اہل ایمان کی تقویت (یعنی مضبوط) ہے۔



صلوا علی الحبیب! صلی اللہ علی محمد

امام ایوبؑ نے جو جی ہے رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں : میلاد منانے مें شैतान की ج़िल्लत  
 और اہلे ईमान की तक्कियत (या'नी मज़बूती) है।

(سبل الہدیٰ والرشاد، 1/363)



امام ابوالعلاء ابوالجعفر جو جی 511 ہی. میں پैदا ہوا۔ اپنے جنمے میں وہ خیڑا بات کے ایمام تھے،  
 اسکے تھکنیک کے مुतابیک آپ رحمۃ اللہ علیہ کا رोजाना 40 سفہات لیکھنے کا ماً مول ثا۔ آپ ہافیز جوں ہدیس تھے۔ (एक लाख  
 अहादीस सुबारका सनद के साथ याद करने वाला ہافیز جوں ہدیس होता है।) लाखों अप्साद ने آप के हाथ पर तौबा की। 13  
 रमजानुल मुबारक 597 ہی. شबے جुमुआ مें वफ़ात हुई، بगداد شارीफ में ہجرते इमाम अहमद बिन हम्बल کे मजार  
 शरीफ के पहलू में आप दफ़ن किये गए। (आंसूओं का दरिया، س. 15, 16 मुलख़्बसन) اलلّاہ پاک کी उन पर رحمत और उन  
 के سदके हमारी बे हिसाब मणिफ़رत हो। امِين بِحَمْدِ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

مَذْاِرِ خَواجَا  
غَرِيبُ نَوَاجِ

الله

کُر آنے کاریم کو  
دے خانے کے فَاءِ دے

مَرْمَانٌ خَواجَهُ  
غَرِيبُ نَوَاجِ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ مَقْرَآنٌ كَرِيمٌ كَوْ دِيْكَهْ سَنَظَرُ  
تَسْبِيرٌ ہُوئِیٌّ ہے، آنکھوں کے درد سے حفاظت ہوئیٌّ

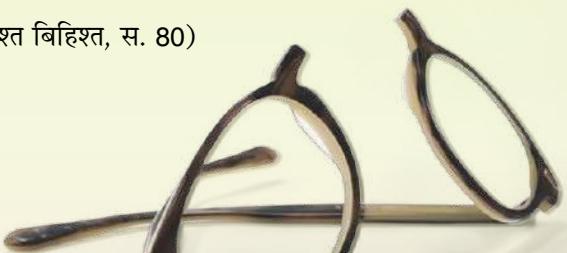
أَمَرَ آنکھِينَ خُشْكَ نَيِّرٌ ہُوئِيٌّ



फ़रमाने ख़ाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ:

کُر آنے کاریم کو دے خانے سے نج़र تेज़ होती है, आंखों के दर्द से  
हिफ़ाज़त होती है और आंखें खुशक नहीं होतीं।

(दलीلुल अ़ारिफ़ीन उर्दू انجِلیزی ترجمہ، ص. 80)



خَواجَا غَرِيبُ نَوَاجِ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ کی ویلادت 14 رجب شَرِیف 537 ہے۔ موتِ بیک 1142 ی۔ میں ہرید اور انٹنیکال شَرِیف (Death) بھی رجب شَرِیف کے مہینے کی 6 تاریخ 633 ہی. کو ہوا۔ آپ ہسنسی ہوسنی سایید ہیں۔ آپ کا والید امداد رامہ دھجارتے شیخِ ابُدُول کَادِیر جیلانی رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ کی چچا جاد بہن ہیں، اس ریشتے سے ہو جوڑے گاؤں سے پاک خَواجَا غَرِيبُ نَوَاجِ کے مامُون ہوتے ہیں۔ اُلمَّاہ پاک کی ان پر رحمت اور ان کے ساتھے ہمایہ بے ہی سا ب مانیگر رہتے ہیں۔

اَمِينٌ بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

الله

## فرامینِ بابا فریج رحمۃ اللہ علیہ

اپنی زبان اور باتوں سے کسی کو مت ستانا، نہ کسی کو بُرا بھلا کھنا، اپنے ظاہر کو  
محفوظ رکھنا، آنکھ اور زبان کی حفاظت کرنا اور انہی رہنمائی میں مصروف  
رکھنا، یا حِل کو دل میں بسائے رکھنا، ذکر و تلاوت سے یہیشہ اپنی زبان  
تَر رکھنا اور شیطانی و سوسوں سے دل کو بچائے رکھنا۔



## فرامینِ بابا فرید رحمۃ اللہ علیہ

अपनी ज़बान और हाथ से किसी को मत सताना, न किसी को बुरा भला कहना,  
अपने ज़ाहिर को महफूज़ रखना, आंख और ज़बान की हिफाज़त करना और इन्हें  
रिजाए इलाही में मसरूफ़ रखना, यादे इलाही को दिल में बसाए रखना, जिक्रो  
तिलावत से हमेशा अपनी ज़बान तर रखना और शैतानी वस्वसों से दिल को  
बचाए रखना।

(सीरते बाबा फरीद, स. 14)



आप کا نام "مسٹر" جب کی "फَرِیدُ الدِّینِ" گanjے شاکر" کے لकड़ب سے مشہور ہیں، آپ کا سیلسلہ نسب  
مُسالمانوں کے دوسرے خلیفہ ہجڑتے ڈمر فاروکے آ' جم رحمۃ اللہ علیہ تک پہنچتا ہے۔ آپ 569 یا 571 ہی. میں پیدا ہوئے۔  
آخیری دینوں میں بیماری کی ہالات میں بھی آپ رحمۃ اللہ علیہ نماجِ با جماعت ہی ادا کرتے۔ دaurane نماجِ ساجدہ میں انٹکاٹ  
شاریف ہوا۔ اعلیٰ اہم کتاب کی عنوان پر رہمات اور عنوان کے ساتھ ہماری بے ہیسا ب مانی فرماتے ہوئے۔

اَمِينٌ بِجَاءُهُ خَاتَمُ النَّبِيِّنَ عَلَى اللَّهِ عَلَيْهِ وَالْهُوَ أَكْلَمُ

شیخ ابو عطاء اللہ (رحمۃ اللہ علیہ) فرماتے ہیں:

اللہ کریم جسی ہر ایک رحمت نا زل فرمائے گا،  
 ۵۹ (رحمت) اُس کی دنیا و آخرت کے سب معاملات میں  
 کفایت کرے گی، تو (روز شریف ہونے کی وجہ سے) جسی ہر  
 کس (۱۰) رحمتیں اُتریں اُس کا کیا عالم ہوگا!



### “एक रहमत” की बरकत

شیخ ابو عطاء اللہ (رحمۃ اللہ علیہ) فرماتे हैं : अल्लाह करीम जिस पर एक रहमत नाजिल फ़रमाएगा वोह (रहमत) उस की दुन्या व आखिरत के सब मुआमलात में किफायत करेगी, तो (दुरुद शरीफ पढ़ने की वजह से) जिस पर दस (10) रहमतें उतरें उस का क्या आलम होगा !

(مطاح المسرات، ص 30)

आप کا نام مسیح مسیح بین انبیاء اعلیٰ اللہ علیہ الرحمۃ الرحمیۃ مسیح مسیح بین انبیاء اعلیٰ اللہ علیہ الرحمۃ الرحمیۃ ہے۔ آپ کی ولادت رجبا کے مہینے میں 767 ہجری میں کاہیرا میں ہوئی۔ آپ حاضر فیصلہ کورআন، کسرات سے تیلآواتے کورআন کرنے والے، ہر سے اخْلَاقُ کے پैکار، سخنی، بے ہتارین مسیحیت، فکریہ اور خُتُبیہ تھے۔ آپ کا اینٹیکا ل 11 ربیعی ل شاہزادہ جو مسیح 854 ہجری میں 87 سال کی عمر میں کاہیرا میں ہی ہوا۔

(الضوء الراجح / 8.101)

اللہ علیہ الرحمۃ الرحمیۃ مسیح مسیح بین انبیاء اعلیٰ اللہ علیہ الرحمۃ الرحمیۃ مسیح مسیح بین انبیاء اعلیٰ اللہ علیہ الرحمۃ الرحمیۃ ہے۔

## ریزک کی تکسیم

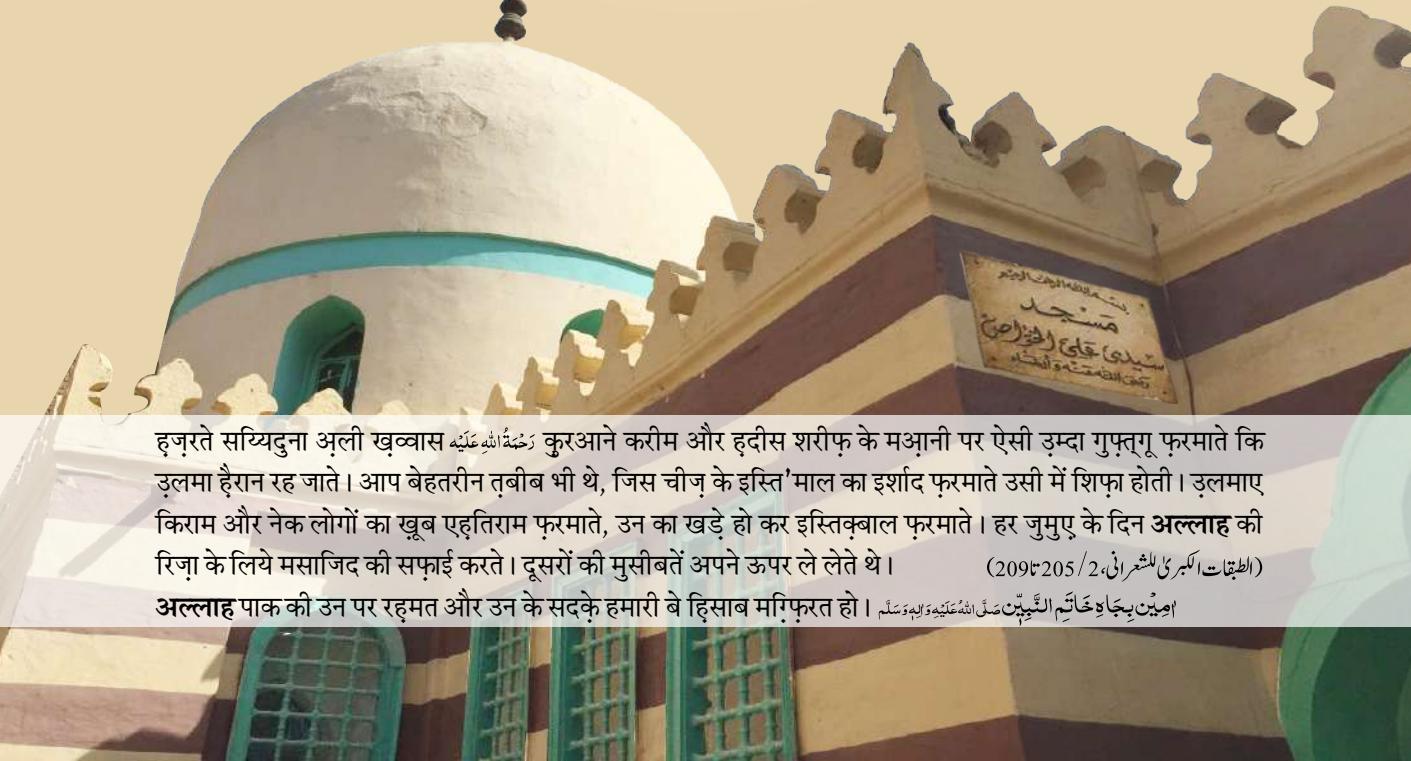
ماہی (یعنی محسوس ہونے والا) رِزق جو بدن کی غذا ہوتا ہے وہ طلوع فجر سے سورج ایک نیڑہ بلند ہونے تک اللہ پر تقسیم فرماتا ہے اور روح کی غذا یعنی مَحْنُوْرِ رِزق جو کہ رکھائی نہیں

ارشاد علی خواہ  
رحمۃ اللہ علیہ



इर्शाद अली ख़ब्वास : مाद्दी (या'नी महसूس होने वाला) रिज़क जो बदन की गिज़ा होता है वोह तुलूएँ फ़ज़र से सूरज एक नेज़ा बुलन्द होने तक अल्लाह पाक तक्सीम फ़रमाता है और रूह की गिज़ा या'नी मा'नवी रिज़क जो कि दिखाई नहीं देता वोह अःस्र की नमाज़ के बा'द से गुरुबे आफ़ताब तक तक्सीम फ़रमाता है।

(لوغ الانوار القدریہ، ص 67)



ہजरتے سچیدونا اُلیٰ خُبُّواس کُر آنے کریم اور هدیس شاریف کے مआنی پر اُنہاں گو فرماتے کि دُلماہ حیران رہ جاتے । آپ بہترین تُبیب بھی�ے، جیس چیजُ کے ایسٹ' مال کا ارشاد فرماتے اُنسی میں شیفہ ہوتی । دُلماہ کی رکیام اور نئک لوموگوں کا خوب اہلتیرام فرماتے، ان کا خڈے ہو کر ایسٹکبَاال فرماتے । هر جو مُعْد کے دن اُللاہ پاک کی ریزا کے لیے مساجید کی سرفہرست کرتے । دُوسرے کی مُسیبتوں اپنے ڈپر لے لئے�ے । (ابیات الکبریٰ للشیرازی، 205/2)

امین بیجا و خاتم النبیین صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ

الله

## हुजूर की विलादत गाह की बरकत

**حضرت علامہ قطب الدین رحمۃ اللہ علیہ فرط آئے ہیں :**

**"حضور صلی اللہ علیہ والہ وآلہ وسلم کی (صلی اللہ علیہ وسلم) کی واقعہ  
ولادت کا بر عاصب اقبال ہوتی ہے" -**



हजरते अल्लामा कुत्बुद्दीन رحمۃ اللہ علیہ فرمाते हैं :

**"हुजूर की (صلی اللہ علیہ والہ وآلہ وسلم) में वाकेअः विलादत गाह पर दुआ क़बूल होती है।"**

(بلد الامين، ص 201)



आप का नाम मुहम्मद बिन अहमद बिन मुहम्मद नहरवाली और लकड़व कुत्बुद्दीन है। आप हनफी क़ादिरी हैं। 917 हिजरी में मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुए। मुस्तनद आलिम, मुफ़सिसरो मुह़दिस और मुसनिफ़ो मुह़क़िक़ थे। आप मस्जिदुल हराम में फ़िक़ह व तफ़सीर का दर्स दिया करते थे फिर मक्कए मुकर्रमा के मुफ़्ती मुक़र्रर हुए। आप का विसाल एक कौल के मुताबिक़ 988 हिजरी में हुवा। अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

امین بحاجۃ عائشہ السُّبَّیْبَیْنَ صلی اللہ علیہ وآلہ وآلہ وسَلَّمَ

(الله)

## जश्ने विलादत का सिला

حضرت شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں : سرکار صدین حنفی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ولادت کی رات خوشی منانے والوں کی جزا یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ انہیں خضل و کرم سے جنّاتُ النَّعِيم میں داخل فرمائے گا۔



हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं :

सरकारे मदीना صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की विलादत की रात खुशी मनाने वालों की जज़ा ये है कि अल्लाह तआला उन्हें फ़ज़्लो करम से जन्नातुन्नईम में दाखिल फ़रमाएगा ।

(ما ثبت بالشیخ، ص 102)

مजारे शैख़ अब्दुल हक़ देहलवी رحمۃ اللہ علیہ

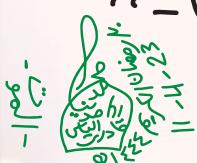
हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी क़ادیریہ رحمۃ اللہ علیہ کी विलादत 958ھ. को देहली (हिन्द) में हुई और यहीं 21 रबीउल अव्वल 1052ھ. को विसाल फ़रमाया, मजारे मुबारक खान्क़ाहे क़ادिरिय्या देहली हिन्द में है। आप हाफिजे कुरआन, इमामुल मुहद्दिसीन फ़िल हिन्द और कई कुतुब के मुसन्निफ़ और शारेहे अहादीس हैं। (माहनामा फैज़ाने मदीना, रबीउल अव्वल 1440, स. 48) अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

امين بحاجة خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم



## ईमान अफ़रोज़ बात

حضرت شیع عبدالحق محدث حلویؒ فرماتے ہیں :  
 ” جس مسلمان میں علم دین حاصل  
 کرنے کی حرکت اور اس کا شوق ہوگا  
 اُس کا ایمان پر خاتمہ ہوگا ۔ ”



हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुह़म्मद<sup>رض</sup> देहलवी<sup>رحمۃ اللہ علیہ</sup> परमात्मा  
 हैं : “जिस मुसल्मान में इल्मे दीन हासिल करने की हिस्स  
 और इस का शौक़ होगा उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा । ”

(معاتٰ تحقیق، ۱/۵۵۹-۵۶۰)



## अल्लाह पाक की नाराज़ी की निशानी

حضرت عبد اللہ علوی شافعی رحمۃ اللہ فرماتے ہیں :

اللّٰہ پاک کی نظرِ رحمت سے محرومی / اُس کی نارाज़ی کی نشانی یہ ہے

بندھ گن ہوں میں صبتلا ہو جائے -



हज़रते अब्दुल्लाह अलवी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ فَرमاتे हैं : अल्लाह पाक की नज़रे  
रहमत से महरूमी और उस की नाराज़ी की निशानी येह है कि बन्दा गुनाहों में  
मुब्लिम हो जाए । (رسائلة الْبَدَأَكَرَّةُ مَعَ الْأَخْوَانِ السُّجَّيْبِينَ مِنْ أَهْلِ الْخَيْرِ وَالْدِّينِ، ص 23)



हज़रते हबीब अब्दुल्लाह अलवी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ 5 सफ़र शरीफ 1044 हिजरी में पैदा हुए, बचपन ही से नूर बसारत (या'नी देखने की कुव्वत) से महरूमी थी मगर अल्लाह पाक ने “नूर बसीरत” से नवाज़ा । बरोज़ मंगल 7 जुल क़ा'दतिल हराम 1132 हिजरी को दुन्याएँ फ़ानी से रुख़सत हो गए । आप का मज़ार शरीफ “तरीम” (यमन शरीफ) के कब्रिस्तान में है ।

امِّنْ بِجَاهِ الْأَخْيَّبِينَ مَلِئُ اللّٰهِ عَنْهُمْ بِالْهُوَّةِ ।

अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब माफ़िरत हो ।



## شافعی اُت نسیب ہوگی

حضرت شاہ فضل رسول بر الون رحمۃ اللہ علیہ فرمائے ہیں :

"جو شعبان المظہم کے روزے اس لئے رکھے کہ حضور ﷺ کو پسند ہے"

اُسے حضورؐ کے صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَلَمْ کی شفاعت نصیب ہوگی،"



ہجرتے شاہ فضلؒ رسموں بदا یونی رحمۃ اللہ علیہ فرماتا ہے :

"جو شا'بان میں مسجدِ جامع کے روچے اس لیے رکھے کہ ہنوز کو پسند ہے کو  
پسند ہے تو اسے ہنوز پاک کی شفاعت نصیب ہوگی ।"

(المعتقد المتفق، ص 129)

ہجرتے اُلّالاما فضلؒ رسموں کا دیری بدا یونی رحمۃ اللہ علیہ اُلّالیمے کبار، کا ایڈے اہلے سُنّت، آسٹانے کا دیری کے  
چشمے چراغ اور ساہبِ تنسیف ہے، 1213 ھی. میں پیدا ہوا ہے اور 2 جुماداں 1289 ھی. میں ویساں فرمایا ہے۔ مجاہد  
مُبارک بدا یونی میں مشہور ہے اُلّمعتقد اُلّبنتق، ابیوارق البُحدید، سیف الجیار ہے ।

اُلّالاما پاک کی عنوان پر رحمت اور عنوان کے ساتھ ہماری بے ہمیساں مانی ہے ।

(کل التاریخ، ص 64، 270، 286)

امین بحاجۃ خاتم النبیین صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَلَمْ

الله

## دushman نے خودا کیون ؟

فرمانِ صدر الْأَفَاضِلِينَ

”جو بدنصیب، صحابہ (علیہم الرحمون) کی شان میں  
بے اب کے ساتھ زبان کھولے وہ شہن خدا رسول  
لے، مسلمان اسیے شخص کے پاس نہ بیٹھے۔“



فَرْمَانَ سَدْرُ اللَّهِ الْأَفَاضِلِينَ  
كَيْفَ يَعْلَمُ الْأَنْجَى  
”जो बद नसीब, सहाबा (عَنْهُمُ الرِّحْمَانُ)  
की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने खुदा व रसूल है,  
मुसल्मान ऐसे शख्स के पास न बैठे।“  
(सवानहे करबला, स. 31)

کब्रِ مُبَاارکَ سَدْرُ اللَّهِ الْأَفَاضِلِينَ



ہجرتے اعلیٰ مولانا سعید مسیح محدث نویں موراد آبادی رحمۃ اللہ علیہ کی ولادت 21 سفارول مسیح ۱۳۰۰ھ.  
معتاشیک پہلی جنواری 1883 بروز پیر شریف ”ہند“ کے شاہ ”موراد آباد“ میں ہुئی । یہ بیٹے  
کے دشمن کا شریف کے وکالت کالیم اپاک حسین اللہ محبوب رسول اللہ و زعم الوکیل نعم المؤمن و نعم الصمید  
کر دیا، 19 جولائی ہج شریف 1367ھ کو دنیا سے رکھا تھا ہے، جامی اخ نرمی میرزا (موراد آباد، ہند) میں آپ کا مزار  
شریف ہے । اعلیٰ احمد پاک کی عنابر رحمت اور عنابر کے ساتھ ہماری بے حد سب مارکرات ہو ।

امین بسجاتِ خاتم النبیین صلی اللہ علیہ و آله و سلم

## दीनी किताबों का अद्ब

مُحَمَّدٌ أَعْظَمُ مَوْلِينَا سَرِّ الدِّرَاهِمِ جَسْتِيْ قَادِرُسْ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرَطَّتْ هُنَىْهُو  
 ”قُرْآن وَ حَدِيث أَعْرُجْتُ بِهِنِيْ كَبَارَهُ صَلَّى يَهُ نُبُيْ كَهُنَى جَاسِئَهُ كَهُونَهُ  
 وَ لَأَلْبُطُرِيْهُسِّيْ بَلَكَهُ يَعُونَ كَهُنَى جَاسِئَهُ كَهُونَهُ رَكْهُيْهُسِّيْ۔“



मुह़द्दिसे आ'ज़म मौलाना सरदार अहमद चिश्ती क़ादिरी رحمۃ اللہ علیہ فरमाते हैं :

“कुरआनो हडीस और कुतुबे दीनी के बारे में येह नहीं कहना चाहिये कि वहां पड़ी हैं  
 बल्कि यूं कहना चाहिये कि वहां रखी हैं।”

(फैज़ाने मुह़द्दिसे आ'ज़म, स. 45)



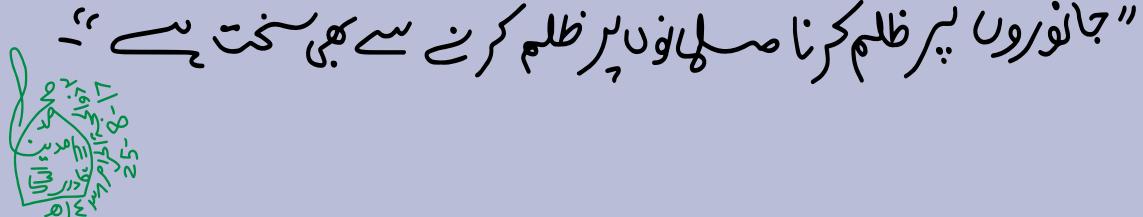
मुह़द्दिसे आ'ज़म हज़रत मौलाना मुहम्मद सरदार अहमद चिश्ती क़ादिरी رحمۃ اللہ علیہ 29 जुमादल उख़्रा 1321 हि. ब मुताबिक़ 22 सितम्बर 1903 ई. में पैदा हुए। कमो बेश 30 साल दसों तदरीस का सिल्सिला फ़रमाते हुए शा'बान शरीफ़ की पहली तारीख़ 1382 हि. ब मुताबिक़ 29 दिसम्बर 1962 ई. जुमुआ और हफ्ता की दरमियानी रात एक बज कर चालीस मिनट पर इस अन्दाज़ से दुन्या से रुक्खत हुए कि हर सांस के साथ “هُوَ اللَّهُ أَكْبَرُ” की आवाजें आ रही थीं।

اُوْيْنِ بِچَابِوْخَاتِمِ الْجَيْمِيْنِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلِيْهِ وَسَلَّمَ

अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

الله

## جانوارों पर ज़ुल्म



مُفْتَنِيَّ أَهْمَدُ يَارُ خَانَ نَرْمَيْمَيْ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فَرَمَاتَهُ هُنَّ :

जानवरों पर जुल्म करना मुसल्मानों पर जुल्म करने से भी सख्त है।

(मिरआतुल मनाजीह, 8/86 मुलख़्बसन)

(मुसल्मान हाथ से भी जुल्म का बदला ले सकता है, केस भी कर सकता है मगर

मज़्लूम जानवर किस से फ़रियाद करे ?)



हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी 4 जुमादल ऊला 1314 हि. ब मुताबिक़ पहली मार्च 1894 ई. को  
सुन्हे सादिक़ के बा बरकत वक्त में पैदा हुए। 3 रमजानुल मुबारक 1391 हि. ब मुताबिक़ 24 अक्टूबर 1971 ई. को  
इन्तिकाल शरीफ हुवा, बा'दे विसाल आप का चेहरए मुबारका फूल की तरह खिला हुवा था और ये ह तसव्वुर करना मुश्किल  
था कि आप फ़ैत हो चुके हैं, आप की आखिरी आरामगाह गुजरात में है।

امين بجا و حاتم الرابيين علی اللہ علیہ السلام و آله و سلم



### کتاب کب فڑا دےگی ؟

فرمان حافظِ صلَّی اللہ علَيْهِ وَاٰلِہٖہ وَاٰسِہٖ عَلَیْہِ: (یعنی) کتاب (عزم میں لٹھا کر جانے کے لئے) جب سینے سے لگائی جائیگی تو سینے میں اُترے گی اور جب کتاب کو سینے سے دور رکھا جائے کا تو کتاب بھی سینے سے دور ہو گی۔



फरमाने हाफिजे मिल्लत : (दीनी) کिताब (हाथ में लटका कर चलने के बजाए) जब सीने से लगाई जाएगी तो सीने में उतरेगी और जब किताब को सीने से दूर रखा जाएगा तो किताब भी सीने से दूर होगी। (शाने हाफिजे मिल्लत, स. 6)

ہاٹھی میل لات ہجڑتے اپل لاما مولانا ابڈو ل ابڈو ل ۱۳۱۲ ہی۔ ب موتا بیک ۱۸۹۴ ہی۔ یوپی  
ہند میں بروج پیر سوہنہ کے وکٹ پیدا ہوئے، ہیٹھی کو را ن اس کدر ماج بھوت ہا کی آپ ”بڈے ہاٹھی جی“ کے لکھ سے مشہور  
थے۔ اپنے ہر امالم میں سونت کا بہت جی�ادا خیال رکھتے ہے۔ جوما دل ٹھکا کی پھلی تاریخ ۱۳۹۶ ہی۔ ب موتا بیک ۳۱  
ماری ۱۹۷۶ ہی۔ رات گیارہ بج کر پچپن مینٹ پر انٹکال شاریف ہوا، آپ کا مزار شاریف اتل جامی ابڑو ل اش را فیضی  
مبارک پور میں ہے۔ اپل لاما پاک کی ٹن پر رہمت اور ٹن کے سد کے ہماری بے ہی سا ب ماغ فر رہے۔

## دّلّات کی مسٹی

فُرْصَانِ قَطْبِ مدِينَةٍ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

”دولت کی مسٹی سے خراپ کی پناہ مانگو،

اس سے بہت دیر صیب ہوش آ جائے۔“



फूरमाने कुत्बे मदीना : رحمۃ اللہ علیہ

”دّلّات کی مسٹی سے خودا پاک کی پناہ مانگو، اس سے بہت دیر صیب ہوش آ جاتا ہے۔“

(سیفی دی کوتّبے مادینا، ص. 18)

کتبہ مبارک  
رحمۃ اللہ علیہ سیفی دی کوتّبے مادینا جی�ا عذیں احمد مادنی

سیفی دی کوتّبے مادینا جی�ا عذیں احمد مادنی 294 ہی. موتا بیک 1877ء میں پیدا ہوا۔ آپ مسلمانوں کے پہلے خلیفہ ہجّری کے اکبر رحمۃ اللہ علیہ کی اولیاً میں سے ہیں۔ 4 جول ہج شریف 1401 ہی. (2-10-1981) بروز جمعہ ۲۰ مئی ۱۹۸۱ء میں نبی اکبر رحمۃ اللہ علیہ کے مسجدے نبی شریف کے میانے پر اپنے پور اనوار سے سیرت دے گئی کے مجاہرے پور انسانوں کے فاسیلے پر دفن ہوا۔ اعلیٰ حکیمین پیغمبر خاتم النبیین ﷺ پر مصطفیٰ علیہ السلام وآلہ وسالم۔

الله

سُونَّتِ کی پُرکاری

ای بزرگ کافل

میرے نزدیک سُنَّتِ کی پیروی  
ہزار سال کی (نفل) عبادت سے بہتر ہے



एक बुजुर्ग का कौल

मेरे नज़्दीक सुन्नत की पैरवी हज़ार साल की (नफ़्ल) इबादत से बेहतर है।

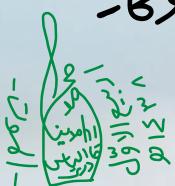
(फैज़ाने रमज़ान, स. 106)



اللّٰهُ

**مरتے وکٹ کلیما نسیب ن हो**

مَشَاخِيْ كِرَامٌ رَحْمَةُ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَلِّسْلَامُ فَرْمَاتَيْ إِسْ: "جُو شَخْصٌ مِسْوَاكَ كَعَادِيْ ہُو مرتے وقت اُ سے کلمہ پڑھنا نفیب ہو گا اور جو اخْبَيْونَ كَهَا تَسْعُورَتے وقت اُ سے کامہ نفیب نہ ہو گا۔"



صلوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَىْهِ وَسَلَّمَ

مَشَائِخِ خَدِيْرَ كِرَامٌ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ فَرْمَاتَهُ هُنْ: "जो शख्स मिस्वाक का आदी हो, मरते वक्त उसे कलिमा पढ़ना नसीब होगा और जो अफ्यून खाता हो, मरते वक्त उसे कलिमा नसीब न होगा।"

(बहारे शरीअत, 1/288)



अगले हफ्ते का रिसाला

